

अधिगम तथा अधिगम शैली



प्रज्ञा चतुर्वेदी
(शोध छात्रा)

राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान,
भोपाल परिसर, भोपाल (म.प्र.)

प्रस्तावना— शिक्षा मानव जीवन के लिए अत्यावश्यक एवम् महत्वपूर्ण औजार है। यह शिक्षा व्यक्ति की आन्तरिक एवम् बाह्य शक्तियों, क्षमताओं, योग्यताओं तथा कलाओं का विकास एवम् प्रकाशन करती है। अतःएव वैदिककाल से ही मानव शिक्षा की व्यवस्था तथा अर्जन में लगा हुआ है। ‘सा विद्या या विमुक्तये’ यह वैदिक घोष शिक्षा के महत्व को स्पष्ट करता है। शिक्षा बालक को अज्ञान और दमन से मुक्ति दिलाती है। वर्तमान काल में भी शिक्षा का मानव जीवन में केन्द्रीय स्थान है, बालक के जीवन में शिक्षा और शिक्षण के साथ अधिगम का विशेष महत्व है। अधिगम से व्यवहार में परिवर्तन होता है। किसी भी विषय या वस्तु को जानने के लिए उसका अधिगम आवश्यक है। अधिगम की यह प्रक्रिया आजीवन चलती रहती है परन्तु प्रत्येक बालक की अधिगम शैली भिन्न होती है क्योंकि अधिगमशैली बालक के सीखने के तरीके, युक्ति एवम् सूचना प्राप्ति के तरीके को इंगित करती है। इस प्रस्तुत शोध—पत्र में अधिगम तथा उसकी शैली पर प्रकाश डाला गया है।

अधिगम — वस्तुतः अधिगम एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसमें बालक (छात्र) के व्यवहार में अनुभव, अभ्यास, प्रशिक्षण के द्वारा परिवर्तन एवम् परिवर्धन होता है। अर्थात् अधिगम प्रत्येक प्राणी का साधारण धर्म है। व्यक्ति अपने जीवन में जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त कुछ न कुछ, किसी न किसी से सीखता रहता ही है। व्यक्ति के सीखने की शक्ति, क्षमता एवयम् योग्यता से ही उसके जीवन का विकास होता है। अधिगम को विभिन्न मनोवैज्ञानिकों एवम् शिक्षा शास्त्रियों ने परिभाषित कर स्पष्ट भी किया है। अधिगम कहीं पर भी किसी भी परिस्थिति में घटित हो सकता है। हम विभिन्न चीजों, वस्तुओं, स्थानों, व्यक्तियों, प्रकृति से सीखते हैं।

1. गिल्फोर्ड के अनुसार— व्यक्ति के व्यवहार में परिवर्तन ही अधिगम है।
2. हरलॉक के मतानुसार— अधिगम विकास है, जो अभ्यास और प्रयास के कारण आता है। अधिगम से छात्र अपने आनुवांशिक संसाधनों का प्रयोग करने में सक्षम हो जाता है।
3. किम्बले के अनुसार— पुनर्बलन अभ्यास के परिणाम स्वरूप व्यवहार में परिवर्तन के रूप में अधिगम होता है।

4. बुद्धवर्थ के अनुसार— नवीन ज्ञान तथा नवीन प्रतिक्रियाओं का आयोजन करने की प्रक्रिया अधिगम की प्रक्रिया की गई लैं
5. क्रो एण्ड क्रो के अनुसार— आदतों, ज्ञान तथा अभिवृत्तियों का अर्जन ही अधिगम कहलाता है।

उपरोक्त परिभाषाओं के सूक्ष्म विश्लेषण से ज्ञात होता है कि प्रत्येक व्यक्ति में कोई विशिष्ट क्षमता या शक्ति होती है। यह क्षमता जन्म से रहती है। उदाहरण के लिए शिशु (बालक) माँ का स्तनपान सीख लेता है। यह उसके लिए सहज व्यवहार है। कालानुग्रुण व्यक्ति जीवन की परिस्थितियों के साथ भी अपने आप को समायोजित करना सीख लेता ही है। परन्तु इस समायोजन के लिए वह आदत, अभ्यास, ज्ञान, अभिवृत्ति तथा कौशल इत्यादि को अर्जित करता है। इन सबके लिए उसे परिश्रम करना पड़ता है। यही अधिगम है।

- अधिगम कौशल दक्षता प्राप्ति की प्रक्रिया है।
- व्यवहार में शाश्वतिक स्थाई परिवर्तन अधिगम है।
- अधिगम में सकारात्मक व नकारात्मक परिवर्तन भी हैं।

स्मिथ (1962) के मत में, अधिगम, अनुभवों के उपरान्त नूतन, व्यहार की प्राप्ति या पुराने व्यवहार को सुदृढ़ करना या कमज़ोर करना है। इसका सीधा सा र्थ है कि व्यक्ति के पहले से उपस्थित व्यवहार में परिवर्तन या नूतन व्यवहार की प्राप्ति के इतर अधिगम के परिणामस्वरूप व्यक्ति स्वयं में पहले से मौजूद व्यवहार को तयागता भी है, यह भी अधिगम ही है। फागिन के अनुसार अधिगम मानसिक घटनाओं या दशाओं का एक क्रम है, जो छात्र में परिवर्तन लाता है। हम अधिगम प्रक्रिया को निम्न चित्र में समझ सकते हैं।



संक्षेप में कह सकते हैं कि अधिगम एक प्रक्रिया है, जिसके द्वारा व्यक्ति किसी परिस्थिति, समय, घटना व देश के अनुरूप की गई अन्तःक्रियाओं के परिणाम स्वरूप अपने व्यवहार में संशोधन करता है। यही व्यवहार में मनोचित्त परिवर्तन लाने, समायोजन करने एवं वृद्धि विकास प्राप्ति में सहायका होता है।

1.3 अधिगम के प्रकार—

आर.एन. गैने नामक प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक ने सोपानिक रूप से अधिगम के प्रमुख आठ (8) प्रकार बताए हैं। उन आठों (8) प्रकारों के नाम अधोलिखित हैं यथा—

1. संकेतक अधिगम
2. उद्दीपक अनुक्रिया अधिगम
3. श्रृंखला अधिगम
4. शाब्दिक साहचर्य अधिगम
5. विभेदात्मक अधिगम
6. सम्प्रत्यय अधिगम
7. सिद्धान्त अधिगम
8. समस्या समाधान अधिगम

अधिगम शैली— अनुभवजन्य सिद्ध तथ्य है कि दो बालक एक तरह से नहीं सोचते हैं और न ही एक जैसे तरह अधिगम करते हैं। वस्तुतः बालक अपनी क्षमता और शक्ति के अनुसार भिन्न प्रकार से अधिगम करते हैं। वे अधिगम के लिए विभिन्न मार्गों, युक्तियों और तरीकों को अपनाते हैं। ऐसा इसलिए कि प्रत्येक बालक प्रथक् तरीके से सीखता है। कोई बालक जब अधिगम लक्ष्य के लिए जिस युक्ति या मार्ग को अपनाता है, तब अधिगम स्थितियों में उसका व्यवहार अधिगम शैली की रचना करता है। अतः अधिगम शैली बालक को सीखने के तरीके एवम् सूचना प्राप्ति की युक्ति है। यह व्यवहार (बालक) का एक प्रतिमान भी होता है, जिसका प्रयोग बालक नई चीज जानने के लाए करता है। अग्रवाल (1987) ने अधिगम के पथ में बालक के भौतिक, सामाजिक, संवेगात्मक तथा वातावरणीय तत्वों के प्रति वरीयताओं का योग ही अधिगम शैली है। उन तथा ग्रिगस (1988) के अनुसार अधिगम शैली अभिप्रेरणा लक्ष्य के प्रति दृढ़ता अथवा एक साथ एक से अधिक एक साथ प्रदत्त कार्यों की आवश्यकता, आवश्यक संरचना की मात्रा एवम् प्रकार तथा सम्पुट्टा को बनाए रखते हुए असम्पुष्ट्टा के स्तर को निरुपित करती है। अधिगमशैलियाँ छात्रों को कक्षाकक्ष में अनुदेशन एवम् अधिगम को प्रभावित करती हैं क्योंकि अधिगम ऐली छात्र की उस युक्ति या तरीके को बताती है, जिसे वह प्रक्रियाओं का ग्रहण करने, सूचनाओं को समझने एवम् धारण करने के लिए पसन्द करता है। प्रत्येक छात्र विभिन्न तरीकों (माध्यमों) से सीखता है। जैसे—

1. देखकर
2. सुनकर
3. समूह कार्य से
4. तार्किक सोच से
5. अनतर्बोध से
6. कल्पना से
7. अभिप्रेरणा से
8. कण्ठरथ करने से

ये सब इसलिए है कि प्रत्येक व्यक्ति भिन्न है। अतः शिक्षक को भी छात्रों की अधिगम शैली सम्बन्धी भिन्नता को समझना चाहिए। शिक्षक अपने शिक्षण का आंकलन करते हुए अपने शिक्षण की गतिविधियों, पाठ्यक्रम तथा मूल्यांकन कार्यों में उत्तम नीतिगत तथ्यों को जोड़े। शिक्षण प्रक्रिया में दृश्यश्रव्यमाध्यमों के साथ समूहपरिचर्चा, पठनलेखन, प्रत्यक्षवस्तु स्पर्श आदि का प्रयोग करना होगा ऐसा करने से छात्र अच्छे सीखते हैं। छात्रानुकूल विधि व युक्ति से पढ़ाना चाहिए।

सारांश – प्रत्येक छात्र अद्वितीय व महत्वपूर्ण है। उसकी सीखने की समान गति नहीं है। अधिगम शैली, अधिगम के वैयक्तिकता से सम्बद्ध हैं, शिक्षक को इन सबका ध्यान रखकर वैयक्तिक भिन्नता के प्रति उसकी सोच व बोध की समझ को जानना है। विभिन्न शिक्षणोपकरणों का प्रयोग छात्र दृष्टि से कक्षा शिक्षण में शिक्षक को करना चाहिए।

1.6 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अग्रवाल जे.सी. (2008), श्चेलबीवसवहल वि.स्मंतदपदह दक कमअमसवचपदहश शिप्रा प्रकाशन, नई दिल्ली
2. क्रो. एल. एण्ड डी क्रो. ए. (1973) श्मकनबंजपवदंस च्लबीवसवहलश यूरेसिया प्रकाशन हाउस।
3. गैरेट हेनरी ई. एण्ड वुडबर्थ आर.एस. (1971), स्टेटिस्टिक इन साइकोलॉजी एण्ड एज्यूकेशन, बॉम्बे, वकील्स, फेफर एण्ड साइमन प्रा. लिमिटेड
4. अग्रवाल, सुभाषचन्द्र (1987), 'लर्निंग स्टाइल अमोंग क्रियेटिव स्टूडेन्स', सेन्ट्रल पब्लिशिंग हाउस, इलाहाबाद